सुप्रभात !!! 11:32 am

Ramnath RKD Student
सुप्रभातम् मैम। 11:33 am

आज हम पाणिनि कृत अष्टाध्यायी के अंतर्गत वर्णित संज्ञा विधायक सूत्रों का अध्ययन करेंगे। 11:34 am

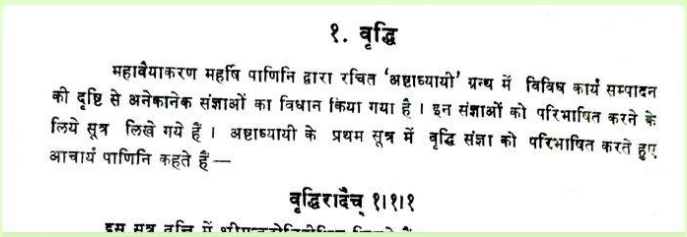

१. वृद्धि

महावैयाकरण महर्षि पाणिनि द्वारा रचित 'अष्टाध्यायी' ग्रन्थ में विविध कार्य सम्पादन की दृष्टि से अनेकानेक संज्ञाओं का विधान किया गया है। इन संज्ञाओं को परिभाषित करने के लिये सूत्र लिखे गये हैं। अष्टाध्यायी के प्रथम सूत्र में वृद्धि संज्ञा को परिभाषित करते हुए आचार्य पाणिनि कहते हैं —

वृद्धिरादैच् १।१।१

PDF पारिभाषिक शब्द.pdf

3 pages • PDF 11:34 am

उपरोक्त सूत्रों को ध्यानपूर्वक पढ़ें ।फिर मैं सूत्रों का अर्थ बताऊंगी। 11:35 am

1:45 036b235ff2a146... 11:42 am

वृद्धिरादैच् -

यह वृद्धिसंज्ञा विधायक सूत्र है। इसका अर्थ है -आकार और ऐच् (ऐ, औ) की वृद्धि संज्ञा होती है। तात्पर्य है कि जब दो वर्ण मिलकर 'आ' 'ऐ' या 'औ' आदेश होते हैं तब इन तीनों को वृद्धि कहते हैं। यह सूत्र पाणिनि कृत अष्टाध्यायी का प्रथम सूत्र है। इसलिए सूत्र का प्रारंभ 'वृद्धि' पद से हुआ है क्योंकि वृद्धि पद मंगल सूचक है और यहां उसका प्रयोग मंगल बोध के लिए हुआ है।

11:49 am

अर्थात् अच् (=स्वर) के व्यवधान से रहित हल् (=व्यञ्जन) के समूह की 'संयोग' संज्ञा है। अच् के व्यवधान से स्पष्ट है कि व्यवधान सदा विजातीयों का होता है, सजातीयों का नहीं। सूत्रस्थ 'हलः' में जाति बहुवचन होने से दो या दो से अधिक वर्णों का ग्रहण होता है।

इसका उदाहरण है शुक्लः या रम्यः। शुक्ल में 'क्' तथा 'ल' के बीच में किसी स्वर के नहीं रहने के कारण प्रकृत सूत्र से दोनों—'क्' एव् 'ल्' की संयोग संज्ञा होती है। फलतः संयोग के पर रहने से 'शु' के ह्रस्व रहने पर भी 'संयोगे गुरुः' १-४-११ सूत्र से गुरु संज्ञा होती है।

संयोग संज्ञा का दूसरा फल है—'संयोगान्तस्य लोपः' ८-२-२३ सूत्र से उसका लोप हो जाना। जैसे सुधी + उपास्यः में 'इको यणचि' ६-१-७७ सूत्र से यण् होने पर सुध् य् उपास्य की स्थिति में 'संयोगान्तस्य लोपः' सूत्र से संयोगान्त 'य्' का लोप प्राप्त होता है, किन्तु 'यणः प्रतिषेधो वाच्यः' इस वार्तिक से उस लोप का प्रतिषेध हो जाता है।

दूसरा उदासरण है—स्त्यानः।

यहाँ स्त्यै धातु से क्त प्रत्यय होने पर संयोगादि अकारान्त धातु होने के कारण निष्ठा के 'क्त' के स्थान में 'न' हो जाता है जिससे स्त्यानः आदि प्रयोग सिद्ध होते हैं।

'लोकसर्वलोकाट्ठञ्' ५-१-४४ सूत्र से 'ठञ्' प्रत्यय होने पर 'ठ' का इकादेश होने पर ञित् के कारण आदि अच् (ओ) की वृद्धि 'तद्धितेष्वचामादेः' से होने के बाद लौकिक शब्द से प्रातिपदिकादि कार्य होने से लौकिकम् पद सिद्ध होता है।

२. गुण

पाणिनि-व्याकरण में गुणसंज्ञा के विधान के लिये अष्टाध्यायी में सूत्र है—

अदेङ् गुणः १।१।२

अर्थात अत् (ह्रस्व अकार) तथा एङ् (= ए और ओ) की 'गुण' संज्ञा है। यह गुण 'इको गुणवृद्धी' १-१-३ सूत्र से इक् अर्थात् इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ एवं ऌ वर्ण के स्थान में होता है। 'ए' गुण 'इ' तथा 'ई' के स्थान में होता है। जैसे – जि जातु से तृच् प्रत्यय आने पर 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' ७-३-८४ सूत्र से 'इ' का गुण 'ए' होकर जेता एवम् नी धातु से तृच् आने पर 'ई' का गुण 'ए' होकर नेता आदि पद बनते हैं।

'ओ' गुण 'उ' तथा 'ऊ' के स्थान में होता है। जैसे स्तु धातु से तुमुन् प्रत्यय होने पर गुण करके स्तोतुम् तथा भू धातु से तुमुन् प्रत्यय में गुण के बाद अवादेश होकर भवितुम् पद बनता है।

'ऋ' एवम् 'ॠ' के स्थान में गुण 'अर्' होता है तथा 'उरण् रपरः' १-१-५१ से रपरत्व हो जाता है जैसे—कृ + तृच् = कर्ता। तॄ + तृच् = तरिता आदि।

सन्धि प्रकरण में आद्गुणः ६-१-८७ सूत्र से अ या आ+इ=ए तथा अ या आ+उ=ओ गुण होते हैं। जैसे—

दिन + इन्द्र = दिनेन्द्र। महा + ईश = महेश।

सूर्य + उदय = सूर्योदय। गङ्गा+उदक=गङ्गोदक।

इसी प्रकार अ + ऋ = अर् गुण होता है तथा 'उरण् रपरः से रपरत्व होने पर कृष्ण + ऋद्धिः = कृष्णर्द्धिः प्रयोग होता है। इसी तरह लपरत्व होने पर तव + ऌकार = तवल्कारः सिद्ध होता है।

तिङन्त प्रकरण में सिध् धातु से तिप् प्रत्यय आने पर 'पुगन्तलघूपधस्य च' ७-३-८६ सूत्र से धातु के 'इ' का गुण 'ए' होने पर सेधति प्रयोग होता है। शुच् धातु से तिप् प्रत्यय में इसी सूत्र से गुण होने पर शोचति प्रयोग होता है।

३. संयोग

संयोग संज्ञा के लिये पाणिनि-सूत्र है—

हलोऽनन्तरा संयोगः १।१।७

श्रीमद्भट्टोजिदीक्षित ने इस सूत्र की वृत्ति में लिखा है—

अज्भिरव्यवहिता हलः संयोगसंज्ञाः स्यु।

१. वृद्धि

महावैयाकरण महर्षि पाणिनि द्वारा रचित 'अष्टाध्यायी' ग्रन्थ में विविध कार्य सम्पादन की दृष्टि से अनेकानेक संज्ञाओं का विधान किया गया है। इन संज्ञाओं को परिभाषित करने के लिये सूत्र लिखे गये हैं। अष्टाध्यायी के प्रथम सूत्र में वृद्धि संज्ञा को परिभाषित करते हुए आचार्य पाणिनि कहते हैं—

वृद्धिरादैच् १।१।१

इस सूत्र वृत्ति में श्रीमद्भट्टोजिदीक्षित लिखते हैं—

आदैच् वृद्धिसंज्ञः स्यात्।

अर्थात् आत् (आ) तथा ऐच् (ऐ और औ) की संज्ञा वृद्धि है। वृद्धिसंज्ञा होने का फल है कि सन्धिप्रकरण में 'वृद्धिरेचि' ६-१-८९ सूत्र से अवर्ण के परे एच् (ए, ओ, ऐ, औ) रहने पर वृद्धि एकादेश हो जाता है। इसके उदाहरण अग्रलिखित हैं—

प्र + एधते = प्रैधते। प्रष्ठ + ओहः = प्रष्ठौहः।

देव + ऐश्वर्यम् = देवैश्वर्यम्। महा + औषध = महौषध।

इसी प्रकार 'अ' तथा 'ऋ' मिलकर 'आ' वद्धि एकादेश हो जाता है इसके लिये पाणिनीय-सूत्र है—उपसर्गादृति धातौ ६-१-९०। अर्थात् अवर्णान्त उपसर्ग और परवर्ती ह्रस्व ऋकारादि धातुओं के अवयव भूत ऋ के स्थान में अर्थात् 'अ' और 'ऋ' मिलकर 'आ' वृद्धि एकादेश हो जाता है। फलतः 'उरण् रपरः' १-१-५१ सूत्र से रपरत्व हो जाता है। यथा—प्र + ऋच्छति = प्रार्च्छति। इसी तरह उप + ऋच्छति = उपार्च्छति।

तिङन्त प्रकरण में धातु के स्वर की वृद्धि होती है। जैसे भिद् धातु से लङ् लकार में धातु के स्वर (इ) की वृद्धि (ऐ) होने पर अभैत्सीत् रूप बनता है।

कृदन्त प्रकरण में धातु से परे ञित् ('ञ्' की जिसमें इत्संज्ञा हो) या णित् ('ण्' की जहाँ इत्संज्ञा हो) प्रत्यय के रहने पर 'अचो ञ्णिति' ७-१-१५५ सूत्र से अजन्त अङ्ग की वृद्धि हो जाती है। जैसे नी + ण्वुल् = नायकः। हृ + ण्वुल् = हारकः। धातु के उपधा में 'अत्' रहने पर 'अत उपधायाः' ७-२-११६ से उसकी वृद्धि हो जाती है। जैसे पठ् + ण्यत् = पाठ्यम्। रम् + घञ् = रामः।

तद्धितप्रकरण में ञित् या णित् प्रत्यय के परे होने पर 'तद्धितेष्वचामादेः' ७-२-१७ से वृद्धि हो जाती है। जैसे—लोके विदितम्—इस विग्रह में लोक शब्द से तद्धित प्रकरण के

1:50 PM

Sanskrit Part 3,RKD...
Principal R, Prity Ghose., Ram...

उपरोक्त सूत्रों को ध्यानपूर्वक पढ़ें ।फिर मैं सूत्रों का अर्थ बताऊंगी। 11:35 am

1:45 036b235ff2a146... 11:42 am

वृद्धिरादैच् -

यह वृद्धिसंज्ञा विधायक सूत्र है। इसका अर्थ है -आकार और ऐच् (ऐ, औ) की वृद्धि संज्ञा होती है। तात्पर्य है कि जब दो वर्ण मिलकर 'आ' 'ऐ' या 'औ' आदेश होते हैं तब इन तीनों को वृद्धि कहते हैं। यह सूत्र पाणिनि कृत अष्टाध्यायी का प्रथम सूत्र है। इसलिए सूत्र का प्रारंभ 'वृद्धि' पद से हुआ है क्योंकि वृद्धि पद मंगल सूचक है और यहां उसका प्रयोग मंगल बोध के लिए हुआ है। 11:49 am

उदाहरण

प्र + एधते = प्रैधते
इस उदाहरण में प्र के 'अ' एवं एधते का 'ए' मिलकर 'ऐ' बना । तो पद बना 'प्रैधते'। 12:04 pm

0:47 810e25111b7d4... 12:10 pm

अगला सूत्र है । 12:11 pm

1:21 3bd65c3b88c64... 12:14 pm

उपरोक्त सूत्र का उदाहरण। 12:14 pm

Type a message